लोकगाथा

मूमल-महेन्द्र और उसका सांगीतिक सौंदर्य

-डॉ. आईदानसिंह भाटी

मूमल अनिन्द्य-सुन्दरी लोकनायिका है, जिसके रूप-वर्णन से लोकगीतों ने अनुपम-भंगिमा प्राप्त की है। नख-शिख सौन्दर्य-रचाव और प्रेम-प्रीत की मनुहारों से पूरित लोकगीत मूमल माडधरा की ऐसी महकती थाती है, जिससे शताब्दियां महक रहीं हैं। जैसलमेर भू-भाग के सांस्कृतिक नाम हैं- 'वल्लमंडल' और 'माड'। इसी माड धरती से उपजी है, आज की लोक-विश्रुत 'राग-माड' और इसी धरती की रूपसी है 'माडेची-मूमल'। 'माडेची' अर्थात 'माड धरती की रहने वाली'।

जैसलमेर की स्थापना से पहले इस माड-धरती की राजधानी थी लौद्रवा नगर। परमारों की लौद्र शाखा द्वारा स्थापित इस लौद्रवा से मूमल का अटूट सम्बन्ध रहा है। अनेक कथा-प्रसंगों, अनेक स्थानों और अनेक रूपों में मूमल के आख्यान मिलते हैं किन्तु सभी कहानियों में 'लौद्रवा' और 'मूमल की मेड़ी' सदैव केन्द्रीय तत्व के रूप में मिलते हैं।

लौद्रवा की इस नायिका मूमल की प्रेम-कथा में इसके प्रेमी सोढ़ा महेंद्रा के प्रेम की भी अलग ही महत्ता है। मूमल के रूप-सौन्दर्य पर रीझा हुआ यह रूप-रसिक भ्रमर अनेक बाधाओं को पार करता हुआ मूमल तक पहुंचता है। मूमल के प्रति उसकी आसक्ति का यह आलम है कि प्रेम निष्ठा में संदेह होने पर वह अपने प्राण त्याग देता है। सोढा महेन्द्रा का सम्बन्ध अमरकोट (वर्तमान पाकिस्तान का ऊमरकोट) से माना जाता है। लोकश्रुतियों के अनुसार वह लगभग 40 कोस (120 किलोमीटर) की दूरी तय करके प्रत्येक रात्रि मूमल से मिलने पहुंचता है। थार के रेगिस्तान में यह प्रेम-कथा हीर-रांझा, सीरी-फरहाद और लैला-मजनू की तरह प्रख्यात है।

मूमल के साथ ही उसकी बहन सूमल का चरित्र इस कहानी में महत्वपूर्ण है, जो उसकी अन्तरंग सखी भी है। उसके कारण ही मूमल का प्रेमी सोढा महेन्द्रा शंकाग्रसित होकर प्रेम की उन्मत्त अवस्था में अपने प्राण त्याग देता है। मूमल की इस लोक कथा में कई कथा रूढ़ियां मिलती हैं, जिनमें भारतीय और अरबी-फारसी की कथा रूढ़ियां प्रमुख हैं। लोक कथाओं और लोकगाथाओं में ऐसी सांस्कृतिक-समन्वय की स्थितियां हमारी लोक-संस्कृति की उदारता और सम्पर्क-सूत्रों की घनिष्ठता को रेखांकित करती है।

कथा सार

लौद्रवानगर काक नदी के किनारे बसा हुआ थार का नखलिस्तान था। इसी भग्न-लौद्रवा में आज भी मूमल की मेड़ी के खंडहर देखे जा सकते हैं। मूमल का यह महल काक नदी के पश्चिमी तट पर था। यह महल एक स्तम्भ के रूप में निर्मित था, जिसे लोक कथा में 'इकथम्भिया-महल' कहा जाता है। 'मेड़ी' महल के सबसे ऊपरी कक्ष को कहा जाता है। जाली झरोखों से शोभित मूमल की इस मेड़ी में सभी प्रकार की भौतिक सुविधाएं विद्यमान थी। इसी मेड़ी में हमारी कथा नायिका निवास करती थी। कथा के अनुसार यह मेड़ी अनेक रहस्यों का घर थी। इन रहस्यों में शेर, अजगर, सांप जैसे डरावने और विषैले व खतरनाक जीव थे, जो किसी भी नवागंतुक को भयभीत कर देते थे, साथ ही मेड़ी के कई गुप्त मार्ग भी थे। अनजान व्यक्ति इन रहस्यों का भेद नहीं कर सकता था। मूमल ने प्रतिज्ञा कर रखी थी कि जो भी पुरुष इन रहस्यों को भेद कर उस तक पहुंच जाएगा और अपनी योग्यता से उसे प्रभावित कर देगा, वह उसी के साथ विवाह करेगी।

मूमल की इस प्रतिज्ञा और उसके रूप-सौन्दर्य की ख्याति दूर-दूर तक फैली हुई थी। तत्कालीन सिंध, गुजरात और मारवाड़ के साथ ही लोकाख्यानों में ईरान, इराक और अफगानिस्तान तक से उसके